रात्रि क्लास ओमशान्ति 28-1-67

"इस रात्रि क्लास मे दो वर्ष पहले ही ड्रामा प्लैन अनुसार हम बच्चों प्रति बाप दादा ने डायरेक्शन और ईशारे दिये हैं। जो हम सभी के ध्यान पर ड्रामा अनुसार ही न रहा है।,"

*-:*****:-*

ऐसे भी बहुत पूछते हैं सभी से ऊंच ते ऊंच कौन है। तो भी कहते हैं ऊंच ते ऊंच भगवान है। प्रिय ते प्रिय कौन है तो भी कहेंगे भगवान। पतित-पावन कौन है? कहेंगे भगवान है। बाप बच्चों को जरूर वरसा ही देंगे। यह है सभी कामन बातें। बाप जरूर सभी को साथ ले जावेंगे। आत्मायें सभी मुक्तिधाम मे रहने वाली हैं। चाहते हैं भगवान आये। जरूर दुःखी हैं। बाप आते हैं सभी को सुख-शांति देने। शांति तो सभी चाहते हैं। कोई कोई मनुष्य थोड़े भी समझ जाते हैं। कोई से तो कितना भी माथा मारो तो भी समझते नहीं। ड्रामा प्लैन अनुसार गीता के भगवान ने गाली तो खाई है ना। तुम सिध कर सकते हो कृष्ण नहीं शिव है। परन्तु शिव को ऐसी गाली नहीं देंगे। गाली फिर ब्रह्मा को देते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। यह समझते नहीं कि गाली देते हैं। यह है भक्ति मार्ग का उल्टा ज्ञान। बाप आकर मुक्तिधाम तो ले जावेंगे ना। और फिर राजयोग भी सिखलाते हैं। तुम जीवनमुक्ति मे जाते हो। बाकी मुक्ति मे जाते हैं। मुक्ति ही तो मांगते हैं ना। पापों का हिसाब किताब सिर पर है वह हिसाब किताब चुक्तु कर सभी चले जावेंगे। समझाया जाता है नालेज को धारण कर ऊंच ते ऊंच पद पा लेवे। आगे चलकर बच्चों को देखना है। अभी तो टाईम पड़ा है। नालेज तो सभी को मिलनी चाहिए ना। सभी को मालूम पड़ेगा। परन्तु टाईम नहीं रहता है पुरुषार्थ करने का। समझेंगे भी फिर भी इतना दूर दूर से आये थोड़े ही सकेंगे। कर के अल्ला को याद करेंगे सो तो ऐसे भी याद करते रहते हैं। मजा तो तुम बच्चों को है। तुम कहते हो भगवानुवाच राजयोग सिखलाकर राज प्राप्त कराते हैं। तुम बच्चे सिम्पल्ट को देखते हो। एमआबजेक्ट सामने है। बाकी मत मतान्तर तो बहुत हैं। उन्हों का भी कोई दोष नहीं। यह बना बनाया नाटक है। हम समझते हैं यह सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा करनी पड़े। अपना ही नाटक है। हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़े ही मानेंगे। इनको देखकर तुम खुश होते हो। निन्दा नहीं रक सकते हो। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने लिये समझाते हैं। बाप बिगर तो कोई छुड़ा नहीं सकते। रावण राज्य से बाप ही छुड़ावेंगे। भागीरथ नाम भी है ना। कहते हैं भागीरथ ने गंगा लाई। वह कैसे लाई। तुम तो ज्ञान हो ज्ञान गंगायें। पतित-पावनी भी तुम हो ना। तुम पतितों को पावन बनाते हो। तुम गंगायें सागर से निकली हो। सब के साथ सागर तो बात नहीं करते। सागर से ही ज्ञान गंगाओं का निकलना कैसे होता है यह भी जब कोई समझो। फिर भी मेहनत करना है। देहअभिमान टूटता ही नहीं। टाईम लेता है। तुम बच्चे खुद भी जानते हो कर्मातीत अवस्था को पाना मेहनत है। कर्मातीत हो जावेंगी फिर रह न सकेंगे। कुछ भी हो कोई भी मरे शिव बाबा तो जीता है ना। उनके तो डायरेक्शन्स बुधि मे है ना। ~~उनको~~ ~~को~~ शिव बाबा को ही याद करना है। बाप हो न हो। बाप के लिये भी कुछ कह नहीं सकते। पावन तो तुम ज्ञान गंगाओं को बनाना है। कुछ भी हो जाये। तुम्हारा धंधा तो चलता रहेगा। तुम सेन्टर्स बन्द नहीं कर सकते हो। कुछ भी हो जाये। तुम बच्चों का काम है यह धंधा करना और याद की यात्रा मे रहना। बाकी शिव बाबा का रथ एक ही मुकर्रर ब्रह्मा है। तुम ब्राहमण हो। तुम कहते सकते हो बाप बच्चों द्वारा कर रहे हैं। बाप कोई मे भी प्रवेश कर पढ़ा सकते हैं। शिव बाबा ने किसमे प्रवेश किया है? शुद्र मे कि ब्राहमण मे? शुद्र मे प्रवेश करना पड़े ना। इस समय तो शुद्र वर्ण है ना। प्रवेश कर फिर नाम बदला है। एडाप्ट किया है। तो यह बातें शास्त्रों मे न होने कारण मुंझते हैं। ब्रह्मा ~~बाबा~~ माना ही ब्राहमण। ब्राहमण फिर बनते हैं फरिश्ता। फिर बनते हैं देवता। तुम सब फिरिश्ते बनते हो फिर देवता बनते हो। फरिश्ता नाम भी है ना। सूक्ष्म वतन वासी फरिश्ते हैं। जगदम्बा ब्राहमण है फिर फरिश्ता बन पीछे देवता बनती है। ओम।